हया की हकीकत

मौलाना जलील अहसन नदवी रह. राहे अमल हिन्दी.

‘नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.’

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

1} बुखारी व मुस्लिम, रावी हज़रत इमरान बिन हूसैन रदी.

खुलासा- हया की सिफत वो सिफत है जिसमे तमाम भलाइया जमा है ये सिफत जिस शख्स के अन्दर होगी वो बुराई के पास नही फटकेगा और भलाइयी करने की तरफ वो मायाल होगा, इमाम नववी (रह) ने रियाजुस सालिहीन मै हया की हकीकत बताते हुवे लिखा है हया एक वस्फ है जो इन्सान को बुरे काम ना करने पर उभारता है और हक वालो के हक की अदायगी मै कोताही से रोकता है और हजरत जुनैद बगदादी (रह) ने फरमाया की हया की हकीकात ये है की आदमी अल्लाह की नेमतो की देखता है और फिर ये सोचता है की उसका शुक्र अदा करने मै मुझसे कितनी कोताही होती है, तो इससे आदमी के दिल मै एक कैफियत पैदा होती है इसी का नाम “हया” है.

2} तिर्मेज़ी

खुलासा- रसूलुल्लाह ﷺ ने लोगो को खिताब करके फरमाया की अल्लाह से पूरी तरह शर्माओ, हमने कहा ऐ अल्लाह के रसूल अल्लाह का शुक्र है की हम अल्लाह से शरमाते है, आप ﷺ ने फरमाया की अल्लाह से शरमाने का इतना ही मतलब नही है, बल्की अल्लाह से पूरी तरह शरमाने का मतलब ये है की तु अपने दिल और दिमाग मै आने वाले खयालात की निगरानी करता रहे और पेट के अन्दर जाने वाली गिजा की देख भाल करता रहे और मौत के नतीजे मै सड-गल जाना और फना हो जाने को याद रखे, (उसके बाद आप ﷺ ने फरमाया-) और जो शख्स आखिरत का चाहने वाला होता है वो दुनिया की जीनत वा सिंगार को छोड देता है और हर मोके पर आखिरत को दुनिया पर तरजीह (महानता) देता है, तो जो शख्स ये सब करता है वही हकीकत मै अल्लाह से शरमाता है.